भारतीय पत्रकारिता

कल, आज और कल



सुरेश गौतम • वीणा गौतम

पत्रकारिता व्याकुल विचार दृष्टि एवं सत्य-तथ्यात्मकता का पहला चरण है। सत्य-संधान की इस सूर्य काया में मनुष्य के गतिशील वर्तमान और भविष्यगत संभावनाओं के बीच इतिहास-चेतना का आलोक है। पत्रकारिता के इस सत्यनिष्ठ नाभिधर्म को गांधीजी ने 'मरकर जीने का मंत्र' कहा है तो वेदव्यास ने इसे 'सबसे बड़ा बल' स्वीकारा है। जातक के अनुसार—'पृथ्वी पर जितने भी रस हैं, सत्य का रस उनमें श्रेष्ठ है। लेकिन 'सत्य को सूचक ही नहीं, प्रेरक भी होना चाहिए' (टैगोर)। 'सत्य में ही लोक प्रतिष्ठित है। सत्य प्रणव रूप शब्द ब्रह्म है, सत्य में ही धर्म प्रतिष्ठित है, सत्य ही अक्षय वेद है' (वाल्मीकि)।

सत्य-तथ्य के इन्हीं मान-मूल्यों से इस ग्रंथ ने अपनी पत्रकारीय शोधयात्रा को परिणति तक पहुँचाया है। निबंध लेखों में व्याप्त बेचैनी और संचार सूचना तंत्र के आणविक विस्फोट से उपजी अद्यतन काल-भंगिमाओं को शब्द ब्रह्म करने में इस ग्रंथ में कहीं संकोच नहीं है, अपितु तुलादंड के न्याय पलड़ों ने युगधर्म को पूरा तौलकर निर्मम पड़ताल की है और काल-फाँकों को कसकर धुना है। इस धुनन-धुनक प्रक्रिया में एक ओर यदि पत्रकारिता की मूल्यनिष्ठ परंपरा है तो दूसरी ओर समकालीन खरोंचों के बीच दुमहिलाऊ पत्रकारीय समझौते भी।

एक अन्य कोण से नव्य पत्रकारिता के विस्फोटक तंत्र का पूरा लेखा-जोखा है तो मनुष्य के मानस-कंप्यूटर में खिसकती-सरकती वैश्विक जमीन भी है। नित नई सूचनाओं के बीच सूर्यकोणी पत्रकारिता दृष्टि को अद्यतन सहेजने-खँगालने का श्रम इस ग्रंथ की कालयात्रा है तो भाषाई पत्रकारिता को हिंदी में पहली बार सामने लाना एक निश्चित उपलब्धि। भाषाई पत्रकारिता की एकीकरण और समन्वयमूलक मूल्य चिंता को इस ग्रंथ की व्याकुल विचार दृष्टि पहली बार सामने लाई है।

पत्रकारिता 'घटनाओं की प्रबुद्ध पूर्वापेक्षा' की कला तो है ही, देश की 'वैचारिक चेतना का उद्वेलन' और समाज की 'वाणी और मस्तिष्क' भी है। यह ग्रंथ पत्रकारिता के इसी कालधर्म की 'तीसरी आँख' और सत्य का 'नाभिचक्र' है।

भारतीय पत्रकारिता
कल, आज और कल